दास कहें परमात्मा

देवराम रभाजी भालसिंग

विश्लेषा प्रकाशन, पुणे

दोहे- रचनाकार
देवराम रभाजी भालसिंग
मु.पो. वाळकी(आमराईवाडी) ,
ता.जि. अहिल्यानगर
मोबाइल ८१६९२६५९९५,९८६९५०१९२७
Devrambhalsing1159@GMAIL.COM

प्रकाशक
विजयकुमार रामचंद्र मोरे
आय ४४, इलाईट ग्रीन एकर्स,
टाकवे रोड, महिंद्रा कंपनीसमोर,
जांभूळ, ता. मावळ, जि. पुणे
मो. ७९७२८१६१८०

मुद्रक
विश्लेषा प्रिंटर्स अँड पब्लिशर्स
गट नं. ४४५, शनि मंदिराजवळ,
कान्हे, ता. मावळ, जि. पुणे ४१२१०६

मुखपृष्ठ
अविष्कार तिप्पेहळीकर
पुणे

प्रथमावृती
एप्रिल २०२५

किंमत १५० रु.



देवराम रभाजी भालसिंग

दोहे– रचनाकार

दास कहें परमात्मा के लिए दो शब्द ...

मेरे एक पुराने सहकारी राजू धोत्रेजी मंत्रालय में काम करते है उन्ही का एक दिन फोन आया की मेरे एक दोस्त की किताब पब्लिश करनी है । मुझे लगा की कोई व्यक्तिचरित्र लिखवाने के लिए आया होगा । अंत में पता चला की एक निसर्ग प्रेमी, पंछीयोंसे प्यार करनेवाले, पंछीयों के सानिध्य रहने वाले, उनको दानापानी खिलाने वाले एक अध्यात्मिक व्यक्तित्व की खुद की काव्य पंक्तियॉ है और वो भी दोहे के स्वरुप में । मुझे खुशी हुई की पहिली बार एक अध्यात्मिक किताब हम पब्लिश करने जा रहे है । हमारे विश्लेषा प्रकाशन की यह पहिली अध्यात्मिक किताब है।

इस किताब के लेखक कवि एक सीधे साधे स्वभाव के इंसान है । उन्होंने अपना जीवन महाराष्ट्र के अहिल्यानगर (अहमदनगर) जिले के वालकी गॉव में बिताया है । उनकी परवरिश उनके दादा और दादीने की है । साधू संत और भजन गायन में रुची रखनेवाले परिवारसे आने की वजहसे उनका स्वभाव भावूक और निरागस है । उन्हाने अपने जीवन की सुरुवात भारतीय सेना में भरती होकर की है । सेना से सेवानिवृत्त होकर वापस आने पर उन्हाने महाराष्ट्र के थाने शहर में और नई मुंबई में पुलीस सेवा में तीस साल बिताये । हालही में वो अपने गांव में खेती पर रहते है । आसपास का परिसर पेड पौधोंसे हराभरा है । पेड की छाँव की वजहसे पंछीयोंकी गुंजाहट से सारा परिसर खिल उठता है । ऐसे वातावरण में रचनाकार देवरामजी रभाजी भालसिंगजी दोहे लिखते है । पंछीयोंके समीप रहकर उनको बडा आनंद महसूस होता है। उसी आनंद में उनके मन में परमात्मा का वास होता है, तबी उनके हाथों लिखे गये दोहे साक्षात ईश्वर की भाषा होती है । धरती के सब प्राणी मात्रा एक है । परमात्मा सब पर एक जैसा प्यार बरसाता है। हिंदू, मुस्लीम, शीख, इसाई, ऐसे किसी भी जाती या धर्म के आधार पर इंन्सान को नहीं बाँटना चाहिए । सब का ईश्वर एकही है यही उनके सभी दोहें का मतलब है ।

श्री देवराम भालसिंगजींने लगभग दो सौ से जादा दोहे लिखे है । इस मेंसे कुछ हिंदी में है और कुछ मराठी में है । इस किताब में केवल हिंदी में लिखे गये दोहे समाविष्ट किये गये हैं । कुल मिलाकर १३० दोहे इस किताब में सामील किये गये है । दोहे की भाषा एकदम सरल और सीधी है । ताकी स्कुली बच्चा भी पडकर उसका मतलब समज सकता है ।

हिंदू मुस्लीम शीख इसाई रे । सब हैं भाई भाई रे ।
मंदीर मस्जिद चर्च गुरुद्वारा रे । प्रार्थना एक हैं भाई रे ।
आओ प्रेमसे पाओ प्रेमसे रे । प्रेम बिना कुछ नही भाई रे ।
दास कहे अनेक में एक रे । एक ही अनेक भाई रे ।

संत कबीर जी रचना जैसी सरल और जीवन की राह दिखानेवाली पंक्तियाँ उन्होंने लिखी है । किसीभी मजहब के लोग जब अपने परमात्मा की प्रार्थना करते है तभी सभी प्रार्थना का मतलब एकही होता है और सभी प्रार्थना एक जगहही पहूँचती है । परमात्मा केवल पुजा का नहीं बल्की प्यार का प्यासा होता है । इसलिए सब लोग आपस में प्यार करो, प्यारसे जिंदगी गुजारो । देवरामजी की विशेषता यह है की वो केवल लिखते नहीं, जैसे लिखते है वैसा अनुसरण भी जीवन में करते है । उनके सानिध्य में रहनेवालें केवल मनुष्यही नहीं बल्कि पशू पक्षी भी उनसे प्यार करते है । अपने घर के आसपास के पेडों पर आने वाले पंछीयों को दाना और पानी डालने की सीख तो उन्हे अपने दादाजीसे मिली है । उसका पालन वो आजभी बडी सहृदयतासे करते है । आज भी उनके घरके पासवाले पेडपर शेंकडो पंछी पनाह लेते है । चारा पानी खाते पिते है और निडरता से रहते है । जिसका हृदय इतना तरल होता है उन्हीं के पास पंछी निडर होकर आ जाते है । पंछीयोंसे उन्हे इतना प्यार है की कभी कभार वो बाहर भी गये तो पंछी बेजार हो जाते है ।

सब में तू विराजमान हैं । भेद अभेद क्या हैं रे ।
सारा ब्रम्हांड तू हैं । फिर धर्म जात पंथ क्या हैं ?

तू मुझे बता सत्य क्या हैं। कोई मुझे मत डराना रे।
दास कहें परमात्मा। सबके प्रति समभाव में तू मिला रे।

देवरामजी भालसिंग कहते है की अगर सारे ब्रम्हांड में एकही ईश्वर है तो ये लोग जात धर्म के नाम पर क्यो लढ रहें है? आपस में प्रेमभाव रखनेसे विश्व में शांती फैल जाती है। उनकी सभी दोहें का मतलब प्यार, प्रेमभाव , विश्वशांती, और परमात्मा से भक्ति करना यही है।

मुझे पुरा विश्वास है की देवरामजी की यह रचनाए किसी भी अध्यात्म में रुची रखनेवाले लोगोंको पसंद आयेगी। जब भी कभी इंसान निराशा की छाया में समय बिताता है तभी यह दोहे आवश्य पढने चाहिए। एक प्रकार की उर्जा मन में पैदा हो जायेगी। आपकी हाथ में यह किताब देते हुए हमें बेहद खुशी हो रही है। आशा की हमारा यह प्रयास आपको पसंद आयेगा। जयहिंद।

विजयकुमार मोरे
चरित्रकार/लेखक/ संपादक
पुणे

रचनाकार का मनोगत

ॐ नमः शिवाय

मेरा स्वभाव सरल, सत्य बोलना और कम बोलना है । निसर्ग सानिध्य मुझे बहूत पसंद है । इसलिए मेरा जादा तर वक्त पेड, पंछी, वृक्ष, प्राणी और खेतोंमें गुजरता है । मेरा बचपन मेरे दादाजी शामराव कुटे और दादी द्रोपदीबाई इनके घर कोल्हेवाडी गांव मेंही बिता । दादा दादी बडे श्रध्दालू और धार्मिक प्रवृती के थे । जब मै बहूतही छोटा था तब मेरे दादाजी मुझे अपने कंधे पर बिठा के आसपास के परिसर में इकट्टा हूई चिटीयों को शक्कर और पंछीयों को दाना डालते थे । हमारे जिले में हमेशा अकाल होने के कारण मेरे माता पिता रोजी रोटी कमाने के लिए दुसरे गांव जाते थे । इसलिए मुझे अपने दादा दादी के पास रहना पडता था ।

दादाजी के साथ रहने की वजहसे और उनकी अच्छी आदत की वजहसे मेरा मन भी निसर्ग और पंछीयों में ही जादातर लगता है । निसर्ग में रहना, घुमना, पंछीयों के साथ रहना मुझे आजभी अच्छा लगता है । जादा तर मेरा समय अकेले में और पंछीयों ही बितता है । लोगोंसे जादा बात करनेसे मै मौन में रहना पसंद करता हूँ या फिर पंछीयों के साथ समय बिताता हूँ ।

मेरी शिक्षा जादा नहीं हुअी है लेकीन अपनी गरिबी पर काबू पाने के लिए शिक्षा को अधुरा छोडकर फौज में भरती होंना पडा । फौज में सेवा के निवृती के बाद थाना शहर पुलीस में भरती हुआ । थाना के बाद नवी मुंबई पुलीस में भी मैने सेवा की । लगभग ३० साल पुलीस में सेवा करने के बाद सेवानिवृत्त हुआ हूँ । सेवानिवृती के बाद मेरा मन अध्यात्म की ओर अधिक बढ गया । मै जादातर ध्यान, मौन में रहने लगा । महान संतों और विचार प्रवर्तकों को पढा और सुना । स्वामी रामकृष्ण परमहंस, बाबा निमकरोली, रमन महर्षि,

जे. कृष्णमूर्ती और आष्टावक्र गीता को सुना है । मुझे संत कबीरजी बहूत अच्छे लगते है, रामकृष्ण परमहंस जी का भक्तिभाव बहूत अच्छा लगता है । बाबा निमकरोली का प्रेमसेवा भाव, रमन महर्षिजीं का सेवा भाव अच्छा लगता है । मैने महाबोधी गौतम बुध्द और महावीर जैनजी को बहूत सुना है, पढा है । उनका शून्य निर्वाण भाव अच्छा लगता है । मै शिवजी और माँ काली का बहूत बडा भक्त हूँ , दास हूँ । मै अपने आपको केवल परमात्मा का ही दास मानता हूँ । शिवजी और माँ काली के प्रेरना से मैने रात के चार बजेसे सुबह के छः बजे तक की अवधी में यह रचनाएँ लिखी है । सुबह मेरी ओम का ध्यान होने के बाद यह रचना लिखी है । इसलिए यह परमात्मा प्रसाद है ऐसा मुझे लगता है ।

देवराम रभाजी भालसिंग
दोहे रचनाकार
वालकी (आमराई), जि. अहिल्यानगर
महाराष्ट्र

१

सब आलम का रखवाला। साहेब तेरा खेल निराला।
मैं फकीर तू वजीर । तेरा भेद निराला रे ।
मै साक्षी तू दृष्टा। तेरा रंग रे न्यारा रे ।
मै आत्मा तू परमात्मा । तेरा ही सब खेला रे ।
तू ही ब्रम्ह है तू निर्वाण । तीनो लोक तेरा ।
कहे दास तेरा तू मालीक रे । मन,बुध्दी के परे प्रेमसे मिला रे ।

२

सारे दुनिया का रखवाला । जिसने जैसा चाहा वैसा मिला।
तू बुध्द है तू महावीर । तेरा रंग है निराला ।
तू महंमद है तू कृष्ण काला । तेरा भेद रे निराला ।
तू येशू तू नानक है । सब खेल है तेरा ।
तू ही तू है तीनों लोक में । खेल तेरा न्यारा रे ।
दास कहे परमात्मा । सारा द्वंद मिटाया रे ।

३

सारी दुनियाने डंका बजाया । भगवान बुध्दने जन्म लिया।
तुने निर्वाण को पाया । जाती धर्म का भेद मिटाया ।
पौर्णिमा के चांद में । तुने परमात्माको पाया ।
दास कहे परमात्मा। सगुण निर्गुण का भेद शुन्य में.मिटाया रे ।

४

साई तेरा भेद निराला । मै पामर तू भेद अभेदसे निराला ।
मै अज्ञानी तेरे बिन नहीं सहारा । तू ही तू है सारा भेद मिटाया ।
मै अकेला, सहारा तेरा । सगुण निर्गुण भेद मिटाया।
निर्वाण बिना जगत सुना । दास कहे तू एक है सारा भेद मिटाया ।

प्रसन्न दांपत्य में घर एक मंदीर जैसा होता है
जिसका निर्माण दो हृदय मिलकर करते है

५

जाती धर्म का भेद मिटाओ । निर्वाण का अंतिम सत्य को पाओ ।
ना हिंदू, ना मुस्लीम ना ख्रिश्चन । सबका भेद मिटाओ ।
शुन्य में ठहर जाओ । अपना सारा भेद मिटाओ ।
कहे दास प्रेमही सब है । कोई भी पंथ आओ सारा भेद मिटाओ ।

६

ओ मालिक मेरे प्यारे । तूज बिन नहीं कोई सहारा रे ।
मै अनजान खडा अकेला । तुझे ढुँढू कहा रे ।
तू मालिक मै बेचारा । तूज बिन जाऊ कहाँ रे ।
दास कहे तू ही तू है । सारी दुनिया का रखवाला रे ।

प्रसन्न दांपत्य में घर एक मंदीर जैसा होता है
जिसका निर्माण दो हृदय मिलकर करते है

७

ओ मालिक मेरे प्यारे । तेरा खेल निराला रे ।
कभी रोटी के लिए तरसाता । कभी छप्पर फाड के देता ।
कभी चाँद जैसा शीतल रे । कभी सूरज जैसा तपता रे ।
कभी प्रेमसे, कभी ठोकरसे । सब कुछ खेल तेरा रे ।
कहे दास तेरा तूही सब कुछ है । मन बुध्दी के परे प्रेमसे मिला रे।

८

ओ मुरली बजाने वाला । तेरा खेल रे न्यारा रे ।
कभी भीतर कभी बाहर । तू है कृष्ण काला रे ।
कभी साक्षी कभी दृष्टा । तेरा भेद निराला रे ।
दास कहे तू परमात्मा तू निर्वाण । सारा भेद मिटा डाला रे।

प्रसन्न दांपत्य में परिवार के संस्कारों के अनुरुप मैत्री और सामाजिक संबंध सौहार्द की भावनाओंसे पनपते रहते है।

९

संगी साथी कोई नहीं रे । साथी अकेला चलो रे ।
माता पिता ना बहन भाई । सब माया का खेल रे ।
ना जंगल में ना मंदीर में । मन बुध्दी के परे प्रेमसे मिला रे ।
ना गाडी में ना बंगले में । तू पार ब्रम्ह के पार रे।
दास कहे तू निर्वाण रे । तू शुन्य है तू अरिहंत रे ।

१०

संगी साथी कोई नहीं । सब माया का खेला तू निर्वाण रे ।
माता,पिता, बहन बंधू । कोई नही तू अकेला तू निर्वाण रे ।
धन लाख करोड कमाया । फिर भी क्या पाया तू निर्वाण रे ।
दास कहे तू सब में एक है । अनेक में एक तू निर्वाण रे ।

प्रसन्न दांपत्य में परिवार के सभी सदस्यों के
विचारों का सन्मान किया जाता है ।

१०

ओ मेरे मालिक । तोहे ढुँढू कहाँ रे ।
ना मंदीर में ना मस्जिद में । तेरा पनाह कहाॅ रे ।
ना मन में ना बुध्दी में । तू है कहाँ रे ।
दास कहे तू अनंत है । तू प्रेमबिना तुझे ढुँढू कहाॅ रे ।

११

तू परमात्मा तू निर्वाण रे । तू भितर में बाहर काहे ढुँढे रे ।
मन बुध्दी के परे तू । आखिर प्रेम से मिला रे ।
तू ब्रम्ह है तू अरिहंत रे । आखिर शून्य में मिला रे ।
दास कहे तू सब में एक है । एक में अनंत रे ।

प्रसन्न दांपत्य में पिछली पिढी का सन्मान और भावी पिढी के भविष्य का विवेकपूर्ण निर्माण छिपा होता है ।

१२

पैसा लेकर आवत है । काहे का परमात्मा रे ।
वो सागर है । तू बुँद भी नहीं रे ।
अहंकार को छोड तू । प्रेम से तू आवत रे ।
दास कहे तू अनंत रे । भीतर बाहर एक रे ।

१३

जनम जनम ढुँढा । अब हुआ तेरा कमाल रे ।
भीतर ढुँढा बाहर ढुँढा । तू मन बुध्दी के परे रे ।
तू सागर है तू अनंत रे । सब कुछ तू है तेरी मर्जी रे ।
दास कहे तू अनंत रे । तू प्रेम का सागर रे ।

प्रसन्न दांपत्य में स्त्री पुरुष जीवन की हर धूप छाँव मे मिलकर चलते है ।

१४

भीतर बाहर एक है । भाई प्रेम से आओ रे ।
चाहे शराबी चाहे गंजाडी । भाई प्रेमसे आओ रे ।
उद्योगपती हो या राजनेता । भाई प्रेमसे आओ रे ।
दास कहे तू एक है । प्रेंम भाव से मिला रे ।

१५

हिंदू मुस्लीम शीख इसाई रे । सब है भाई भाई रे ।
मंदीर मस्जिद चर्च गुरुद्वारा रे । प्रार्थना एक है भाई रे ।
आओ प्रेमसे पाओ प्रेमसे रे । प्रेम बिना कुछ नही भाई रे ।
दास कहे अनेक में एक रे । एक ही अनेक भाई रे ।

प्रसन्न दांपत्य में प्रेमपूर्ण स्वयंस्फुर्त पारिवारिक
अनुशासन बना रहता है ।

१६

माँ बाप की सेवा नहीं । व्यर्थ जीवन गवाया भाई ।
लुगाई आयी । मोह माया में अटकाई ।
बच्चे आये । धन कहाँ रे भाई ।
दास कहे तू जन्म व्यर्थ गवाया । परमात्मा बिन तेरा कौन है भाई ।

१७

शिवशक्ति को जो जानेगा । वही ब्रम्हांड के रहस्य जानेगा ।
चाहे प्रकृती में चाहे भक्ति में । तेरा रहस्य जो जानेगा ।
तेरी शरण में जो आयेगा । वही परमसत्य को जानेगा ।
दास कहे परमात्मा । प्रेम भावसे आना शिवशक्ति को जानना रे ।

प्रसन्न दांपत्य में स्वर मधूर और वाणी प्रेमसे भरी होती है ।

१८

तू जाने खेल तेरा । मै तो अकेला रे।
सुख भी देखा, देखा दुःख । भोग भी देखा,देखा योग ।
स्वर्ग भी देखा । देखा धन का उपयोग ।
दास कहे तू एक रे । तुझे शुन्य में पाया रे।

१९

तोडके सारा बंधन । साथी अकेला चलो रे ।
माता पिता बहन बंधू । माया का खेल रे ।
ना दोस्त ना सहारा । ना धन का पिटारा रे ।
दास कहे तू अकेला । मालिक सब कुछ खेल तेरा रे ।

प्रसन्न दांपत्य में भोजन में स्वाद, मोहक शृंगार और उष्मापुर्ण स्पर्श से संबंधों में मधुरता बनी रहती है।

२०

मंदीर भी देखा मस्जिद भी देखी । देखा गुरुद्वारा चर्च ।
खाली कोई न मिला । मै शून्य में परमात्मा मिला ।
देश भी देखा, देखा राज्य । जिल्हा देखा, देखा तहसील ।
कहे दास अकेला । सबमें एक मिला ।

२१

मंदीर मस्जिद चर्च देखा । अपना अपना ढोल बजाए ।
पंडीत मौला फादर देखा । सबका भेद है अपना ।
किर्तन भी देखा, देखा रे नमाज । मालिक परमात्मा कहीं न मिला ।
दास कहे ढुँढी सारी दुनिया । अखिर तू मुझमेंही मिला ।

प्रसन्न दांपत्य में एक दुसरे का सहारा बनकर
एक दुसरे को कमजोर नहीं होने देते।

२२

मंदीर मस्जिद चर्च गुरुद्वारा । उड जारे पंछी कहाँ ठिकाना तेरा।
भीतर बाहर फिरता है सारा । मनही मंदीर कहाँ ढुँढता फिरा ।
डाल डाल पर तेरा सहारा । बाहर काहे ढुँढता फिरा ।
दास कहे सब कुछ खेल तेरा । उडत उडत तू भीतर मिला ।

२३

कई जन्मों का फल पाया । शुन्य को उपलब्ध हो गया ।
सार खेल तेरा हो गया । मन बुध्दी के परे परमात्मा पाया ।
यह संसार सब झुठा । सब कुछ खेल तेरा जान लिया ।
दास कहे तूही तू प्यारा । मौन ध्यान एकांत में मिला ।

प्रसन्न दांपत्य में दो हृदय एक दुसरेसे प्रेम और विश्वास पाया करते हैं ।

२४

हे इंसान तू पहले .। आदमी बन भाई ।
हिंदू मुस्लीम शीख इसाई । सारा पंथ का खेल भाई ।
मंदीर मस्जिद चर्च गुरुद्वारा । अपने अपने ढोल बडाए ।
दास कहें परमात्मा अनेक में एक है भाई रे ।

२५

सब आलम का रखवाला । बोलो श्रीकृष्ण मथुरावाला ।
उपर भी तू निचे भी तू । जहाँ देखू तूही तू ।
आदमीयों में तू प्राणीयोंमें तू । सारा चराचर तू ।
दास कहें परमात्मा । सारे रंग में रंगा है तू ।

प्रसन्न दांपत्य में घर एक मंदिर जैसा होता है,
जिसका निर्माण दो हृदय मिलकर करते है ।

२६

हाँ मै बुधत्व हूँ भाई । ना हिंदू ना मुस्लीम ना इसाई ।
धर्म जात पंथ के उपर भाई । मन बुध्दी के परे भाई ।
ना मंदीर में ना चर्च में ना मस्जिद में । सब में तू एक है फिर भी अंजान भाई।
दास कहें परमात्मा रे भाई । तेरे नाम हजारो प्रेमविना है व्यर्थ भाई ।

२७

मन को छोड । परमात्मा को जोड ।
मन माया का खेल रे । मन को छोड रे ।
मन बुध्दी परमात्मा का रोडा रे ।
दास कहें मन उलटा पुलटा रे । तू परमात्मा को जोड रे ।

प्रसन्न दांपत्य में एक दुसरे के प्रति समर्पण और प्रेम की भावना रखना अनिवार्य है ।

२८

ओ मेरे इन्सान । नफरत क्यों है भाई ।
हिंदू मुस्लीम शीख इसाई । सब है इन्सान भाई ।
मंदीर मस्जिद चर्च गुरुद्वारा । प्रार्थना एक है भाई ।
दास कहें परमात्मा । प्रेमबिना सब व्यर्थ है भाई ।

२९

हॉ. मै ब्रम्हांड की एनर्जी हुँ । ना रंग है ना रुप है ।
मै अज्ञात हूँ । फिर भी मै दिखती हूँ ।
जनम जनम बीत गये । फिर भी मै अस्तित्वमें हूँ ।
दास कहें परमात्मा । सारी एनर्जी तू है तू ।

प्रसन्न दांपत्य में समजदारी से काम लेना और एक
दुसरे की जरुरतों को समजना जरुरी है ।

३०

हे इन्सान । जाग तू कौन है रे भाई ।
जात धर्म पंथ के उपर । परमात्मा है रे भाई ।
जब तेरा जन्म हुआ । तू कौन था भाई ।
दास कहे परमात्मा । सब भीतर तू अनजान भाई ।

३१

साधू साधू कहते है । कौन है साधू भाई ।
मन रुकता नहीं । धन छुटता नहीं ।
मन मिटता नही । ध्यान लगता नहीं ।
दास कहे परमात्मा । मन बुध्दी के आगे तू भाई ।

प्रसन्न दांपत्य में एक दिशा की बहूत जरुरत होती है ।

३२

दुनिया सारी सयानी । मै पागल अकेला ।
ना मन की सुनता ना बुध्दी की । तू है अकेला मेरा सहारा ।
तेरा खेल तूही जाने । मै तो केवल देखनेवाला ।
दास कहे परमात्मा । मै तेरा पागल अकेला ।

३३

सब कुछ हो रहा है । केवल देखो भाई ।
अच्छा भी देखा बुरा भी देखा । आगे तू है रे भाई ।
मन भी देखा धन भी देखा । उसके आगे तू है भाई ।
दास कहें परमात्मा । प्रेमविना सब व्यर्थ है भाई ।

प्रसन्न दांपत्य में अहंकार या भावनाओं को दूर करो ।

३४

जात धर्म पंथ के आगे । परमात्मा रे भाई ।
नफरत के बीज बोओगे । काहे का परमात्मा भाई ।
प्रेम से आओ नफरत को मिटाओ । आगे परमात्मा भाई ।
दास कहें परमात्मा। प्रेमसे आओ प्रेमसे पाओ बाकी सब व्यर्थ भाई ।

३५

यार मै कौन हूँ । तूम अनजान में तुम्हारे पास खडा ।
ना रंग है ना रुप है । मै अनुभूति करता हूँ ।
ना मन हॅू ना बुध्दी हूँ । प्रेमसे पुकारो सदा तुम्हारे साथ हूँ ।
दास कहें मालिक रे । प्रेमसे आओ प्रेमसे पाओ सदा तुम्हारे साथ हूँ।

प्रसन्न दांपत्य में मन के आधार पर रिश्ता ताकद देता है ।

३६

मौन ध्यान एकांत में । जनम जनम का फल पाया ।
दुनिया बादल है । मै आकाश में ठहर गया ।
क्या पाना है क्या खोना है । सारा भेद मिटाया ।
दास कहें मालिक रे । मै अनजान सारा खेल तेरा जान लिया ।

३७

गुलाम बनके तुने । धन लाख करोड कमाये ।
क्या पाया क्या पाया । वक्त निकलने के बाद याद आया ।
पत्नी कहे मेरे साथ रहो । बेटा कहें धन मत छुपाओ ।
दास कहें मालिक रे । तूही तू अकेला सहारा रे ।

प्रसन्न दांपत्य में पती पत्नी एक दुसरे का सहारा बने और आगे बढे ।

३८

उड जा पंछी तू अकेला रे । सब माया का खेला रे ।
ना माता पिता ना बहन बंधू । अकेला आना अकेला जाना रे ।
आना जाना सहज सुमार । धन कब आया काम रे ।
दास कहें परमात्मा । सारा द्वंद्व मिटाया रे ।

३९

जागो जागो रे भाई । परमात्मा तुम्हारे भीतर है भाई ।
हिंदू मुस्लीम शीख इसाई । प्रेमसे आओ प्रेमसे पाओ भाई ।
कोई ध्यानी कोई मौनी । सब के द्वार एक है भाई ।
दास कहें परमात्मा । धर्म जात पंथ के आगे परमात्मा भाई।

प्रसन्न दांपत्य में एक मन एक आत्मा होना जरुरी होता है ।

४०

हिंदू मुस्लीम शीख इसाई । जागो जागो रे भाई ।
मत बजाओ अपनी डोल बडाई । परमात्मा सब में एक रे भाई ।
मंदीर मस्जिद चर्च गुरुद्वारा । सब मे प्रार्थना एक है रे भाई ।
दास कहें हे परमात्मा । धर्म जात पंथ के आगे भाई ।

४१

तोड के बंधन सारे । पंछी अकेला उड गया रे ।
माता पिता न बहन बंधू । सब माया का खेल रे ।
डाल डाल पर तुही है । मै मस्त अकेला रे ।
दास कहें परमात्मा । धर्म जात पंथ के आगे है भाई ।

प्रसन्न दांपत्य में जादा अधिकार जताना नकारात्मक
विचारधारा बना सकता है ।

४२

सुख में भी तू दुःख में भी तू । मै बीच में खडा अकेला ।
चाहे मंदीर में चाहे मस्जिद में । मै बीच में अकेला रे ।
चाहे गुरुद्वारा चाहे चर्च में । बीच में अकेला रे ।
दास कहें परमात्मा । जनम जनम का फल पाया रे ।

४३

तू है पार ब्रम्ह का वाशी । तेरी महिमा अपरंपार ।
उपर भी तू नीचे भी तू । तेरा दाही दिशामें संचार ।
मन भी तू बुध्दी भी तू । सारे संसार में तेरा विहार ।
दास कहे परमात्मा . तू प्रेम का सागर तेरी महिमा अपरंपार रे ।

प्रसन्न दांपत्य में एक दुसरे की पुरी बात सुनकरही
निर्णय लेना उचित होता है ।

४४

सारी दुनिया का रखवाला । तेरे नाम हजारोंमें तुझे क्या पुकारु ।
बादल भी तू आकाश भी तू । खठास भी तू मिठास भी तू ।
वृक्षों में तू ब्रिज में भी तू । सारा चराचर है तू ।
दास कहें परमात्मा । तेरा खेल तूही जाने मालिक है तू ।

४५

धन लाख करोड कमाया । फिर भी कुछ ना पाया ।
तोड के सारे बंधन । उड गया पंछी अकेला रे ।
रिश्ते नाते सब माया का खेल रे । तू अपना समय व्यर्थ गवाया रे ।
दास कहें परमात्मा । मन बुध्दी के आगे प्रेम भाव में पाया रे ।

प्रसन्न दांपत्य में जीवन बकरार रखने के लिए
एक दुसरे की आलोचना से बचें ।

४६

चल संन्याशी मस्ती में । तू पंछी अकेला रे ।
डाल डाल पर तू है । तू मस्त अकेला रे ।
काम क्रोध को मिटा डाला । अब काहे का रोडा रे ।
दास कहें परमात्मा । तू और मै भेद मिटा डाला रे ।

४७

दुनिया के अलग वस्त्र पहन के । क्या तू संन्याशी हो गया ?
जंगल में झोपडी बना के । क्या तूने काम क्रोध मोह मिटाया ?
पत्थर पूज पूज के तू । मन बुध्दी के परे हो गया रे ।
दास कहें परमात्मा । तेरे भीतर तू कहाँ खोजने गया रे ।

प्रसन्न दांपत्य में मिलकर काम करन से
प्रेम विश्वास की भावना बढती है ।

४८

परमात्मा तेरे हजारो नाम । तू सबमें है विराजमान ।
कोई भी पंथी आओ । रास्ते अनेक तू है एक ।
सारे चराचर में तू है । आँखे अनेक तू है एक ।
दास कहें परमात्मा । प्रेम भावसे पुकारो सब में है एक ।

४९

मन के मंदि का दिया जलाया । मौन ध्यान एकांत में तुझे पाया ।
मन को खाली करतेही। तेरा दिया भीतरही जल गया ।
भीतर भी तू है बाहर भी तू है । प्रेम सागर की भाव में डूब गया ।
दास कहें परमात्मा । मन के मिटतेही तू और मै भेद मिट गया ।

प्रसन्न दांपत्य में समय समय पर एक दुसरे की तारीफ
करनेसे मित्रता बढ जाती है ।

५०

सारे धर्म का सार है । प्रेमसे आओ मालिक को पाओ ।
नफरत के बीज बोओगे । क्या तूम परमात्मा पाओगे ?
धर्म जात पंथ के आगे जाओगे । आगे तुम्हारा मालिक रे ।
दास कहें परमात्मा । प्रेम से आओ प्रेम से पाओ रे ।

५१

मन के मंदीर को जिसने खोजा । वही परमात्मा पायेगा ।
सबमें आत्मा एक है जिसने जाना । वही मालिक को जानेगा ।
हिंदू मुस्लीम शीख इसाई जागो रे । धर्म जात के आगे मालिक रे ।
दास कहें परमात्मा । मै दास तेरा सब में एक है भाई रे

प्रसन्न दांपत्य में पती पत्नी का एक दुसरे से
सम्मान करना प्यार बकरार रखता है ।

५२

मन के मंदीर का दिया जलाओ । प्रेम से आयो प्रेम से पाओ ।
तुज में तू है ढुँढत कहाँ रे । प्रेम भावसे पुकारो आगे खडा है भाई रे ।
गली गली में ढुँढता है । परमात्मा भीतर बाहर खेल है भाई रे ।
दास कहें परमात्मा । सारा चराचर भीतर है भाई रे ।

५३

धन लाख करोड कमाया । खाली हाथ आया खाली हाथ गया ।
दान पुण्य कर्म याद नही आया । जीवन तुने व्यर्थ गंवाया ।
पुरा जीवन मोह माया में गया । क्या पाया तुने क्या खोया ?
दास कहें परमात्मा । तेरे भीतर तू कहाँ अटक गया रे ।

प्रसन्न दांपत्य में पती पत्नी की समझदारी और मधूर रिश्ते परिवार की सुखशांती बनाये रखते है ।

५४

भेजा था उसीने तुझे । वो लेके भी जायेगा ।
बीच का मेल नही समझा । मोह माया में अटक गया ।
कभी लक्ष्मी कभी घरवाली । कहीं बाहरवाली माया में अटक गया ।
दास कहें परमात्मा । जिंदा गुरु की सुनिए परमात्मा हो जायेगा ।

५५

परमात्मा नाम की चादर ओढके । धन लाख करोड की की कमाई ।
भोले भाले मनुष्य की वाट लगाई । काहे का परमात्मा पाया तुने भाई ?
मोह माया में नैया तेरी डूब गयी । अंत समय मे सब याद आयेगा भाई ।
दास कहें परमात्मा । आखिर तेरी नैया तूनेही डुबाई ।

प्रसन्न दांपत्य में परिस्थिती कैसी भी हो धैर्य बना के रखना चाहिए ।

५६

अंत समय आया । अंत समय आया ।
संगे साथी कोई नहीं । खाली हाथ हो गया ।
पुरा जीवन मोह माया में लगाया । क्या पाया क्या खोया ?
दास कहे मालिक रे । तुझे याद क्यों नही आया ?

५७

सारी दुनिया का रखवाला । तेरे नाम हजारो तुझे क्या पुकारु रे ।
धर्म जात पंथ के आगे है तू । तुझे कौन से नामसे पुकारुरे ?
सारा खेल है तेरा । धर्म जात पंथ से तुझे कैसे जोडू रे ।
दास कहें परमात्मा । सारे रंग में रंगा है तू रे ।

प्रसन्न दांपत्य में जो अहंकार और अहंम से दूर रहते है वही सुखी संसार पाते है ।

५८

ना जंगल में ना मंगल में ।
मै तो खडा । केवल साक्षी में ।
बाहर भीतर तूही है । मै तो तुझे केवल देखनेवाला ।
दास कहें परमात्मा । भीतर बाहर खेल तेरा तूही जाने रे ।

५९

खेल तेरा तूही जाने । मै खडा देखनेवाला रे ।
ना मै हिंदू ना मुस्लीम ना बौध्द । ना इसाई ना जैन ।
पंचतत्व का तू बना । खेल तेरा है मै खडा अकेला रे ।
दास कहें परमात्मा । धर्म जात पंथ के आगे तुझे जाना रे ।

प्रसन्न दांपत्य में आपस की नीजी बाते किसी
तिसरे को कभी नहीं बतानी चाहिए ।

६०

तुम भी पागल मै भी पागल ये दुनिया है पागल ।
फिर भी मै देखनेवाला रे ।
जिसने आत्मा को जान लिया । आगे सारा खेल तेरा रे ।
ना मै विचार हूँ ना विचार के उपर प्रतिक्रिया देनेवाला हूँ ।
दास कहें परमात्मा । तेरा खेल तुही जाने मै और तू भेद मिटाया रे ।

६१

तू है पार ब्रम्ह का वाशी । तेरी महिमा अपरंपार ।
मै क्या जानू खेल तेरा रे । मै खडा अकेला रे ।
तेरा खेल तुही जाने । मै तो केवल देखनेवाला रे ।
दास कहे परमात्मा । तेरे रंग में रंगा हूँ मै देखनेवाला रे ।

प्रसन्न दांपत्य में एक दुसरे की पसंदी जानना जरुरी है ।

६२

कौन है तू क्या है तू कैसा है तू ।
कभी कहता है मै रंग हूँ ना रुप हूँ ना स्पर्श ।
कभी कहता है मै पंच महाभूतों का अन्वेषण हूँ ।
कभी कहता है सगुण भी निर्गुन भी मै हूँ ।
दास कहे परमात्मा । सब में विराजमान है तू ।

६३

धर्म जात पंथ के आगे । सबका मालिक एक रे भाई ।
क्या सगुन क्या निर्गून । सब में एक देखो रे भाई ।
सब में आत्मा एक रे भाई । सारे ब्रम्हांड के जीवोंमें तू है भाई ।
दास कहे परमात्मा । प्रेम भावसे ब्रम्हांड देखो रे भाई ।

प्रसन्न दांपत्य में चरित्र और विश्वासही सबसे बडी चीज है ।

६४

आंखे खोल के देखो भाई । सब माया का खेल भाई ।
आंखे बंद करो । माया के परे कुछ और भाई ।
सबमें विराजमान तू है भाई । धर्म जात पंथ के आगे ब्रम्हांड रे भाई ।
दास कहें परमात्मा । प्रेम विना सब कुछ व्यर्थ रे भाई ।

६५

हिंदू मुस्लीम शीख इसाई । सबका मालिक एक तो नफरत क्यों है भाई ।
चाहे आस्तिक चाहे नास्तिक । सबमें विराजमान तू है भाई ।
डाल डाल पर तू है । जहॉ देखू तू है भाई ।
दास कहें परमात्मा . नफरत के बीज मिटाओ प्रेमसे पाओ रे भाई ।

प्रसन्न दांपत्य में जब एक क्रोध से आग बन जाता है
तब दुसरे को पानी बन जाना चाहिए

६६

हाँ, मै ब्रम्हांड का अंश हूँ । मै प्रेम हूँ तुझे उजागर होना है भाई ।
चाहे कुछ भी कहें प्रेमसे तू हिलता है । प्रेम तुझे उजागर होना भाई।
चाहे तू छुपा रहें चाहे खुला । मै प्रेम हूँ तुझे उजागर होना है भाई ।
दास कहे परमात्मा । प्रेम भाव के बिना सब व्यर्थ है रे भाई ।

६७

सभी धर्मो का सार है । मुझे ब्रम्हांड के सभी जीव जंतुओसे प्यार है ।
आस्तिक हो या नास्तिक हो । सब मे आत्मा एकसमान भाई ।
कोई भी पंथी आओ । प्रेमभाव के बिना सब कुछ बेकार है भाई ।
दास कहें परमात्मा । प्रकृतीही प्रेम है प्रेमही परमात्मा है ।

प्रसन्न दांपत्य में सुखी कुटुंब के तीन पैये होते है
प्रेम, आत्मियता और त्याग ।

६८

क्या अच्छा क्या बुरा । मै तो देखनेवाला रे ।
तुने मुझे चुना है । अब तुही जानो रे ।
कभी मोह माया में अटकाता । कभी प्रेम भावसे भर देता ।
दास कहें परमात्मा । तू अनजान है मै देखनेवाला रे ।

६९

ब्रम्हांड के जीव जंतुओसे मुझे प्यार है । खेल तेरा है मै देखनेवाला रे ।
कभी परिवार देखने को कहता है । कभी कहता है भूल गया मुझे तू रे ।
कभी कहता है प्रेमसेवा ही जीवन है । कभी कहता है तू मुझे देख रे ।
दास कहें परमात्मा । सारे ब्रम्हांडका राज है तू रे ।

प्रसन्न दांपत्य में एक दुसरे के लिए समय निकालना
घर संसार का इंधन होता है ।

७०

कभी माँ काली । कभी हनुमान बाबा रे ।
कभी कहते हो तू साक्षी रे । कभी कहते हो शिव का दास रे।
तुने मुझे चुना है । मै कहाँ जाऊ रे ।
दास कहे परमात्मा । माँ, मै तेरा भोला दास रे ।

७१

जांऊ तो जांऊ कहाँ । खेल तेरा है तुही जाने रे ।
कभी ये शक्ति कभी वो शक्ति । तुने चुना है तुही जाने रे ।
दास हूँ मै तेरा बच्चा हूँ तेरा। सारा खेल है तेरा रे ।
दास कहें परमात्मा । मै अनजान खेल तेरा तूही जानो रे ।

प्रसन्न दांपत्य में पती का बुरा वक्त आता है
तो पत्नी का हमेशा साथ देना कर्तव्य होता है ।

७२

राजा रंक फकीर । मै तो केवल देखनेवाला रे ।
दु:ख भी दिया सुखभी दिया । तेरा खेल तूही जाने रे ।
जिसके लिए तुने चुना रे । तुही जाने खेल तेरा रे ।
दास कहे परमात्मा । दु:ख और सुख भी तेरा मै अकेला रे ।

७३

सब कुछ खेल तेरा । तेरा तेरा रे ।
तुने चुना है । दास हूँ तेरा मै बच्चा तेरा रे ।
अच्छा भी नहीं बुरा भी नहीं । सब तेरा तेरा रे ।
दास कहें परमात्मा । खेल तेरा तेरा रे ।

प्रसन्न दांपत्य में पती पत्नी का रिश्ता केवल
अच्छे संवाद पर टिका होता है ।

७४

दिल की बात सुन लियो । मेरे भोलेनाथ ।
खेल तेरा तुही जाने रे । हम तो देखनेवाले रे ।
तेरा बच्चा दिल का सच्चा । तुने चून लिया रे ।
दास कहे परमात्मा । सब कुछ तुने दिया खेल तेरा रे ।

७५

जनम जनम का फल पाया । तुने मुझे चून लिया रे ।
भेद अभेद का खेल मिटाया । तेरे चरणों का दास बनाया रे ।
भोलेनाथ तेरी कृपा का प्रसाद । प्रेम भाव से मैने पाया रे ।
दास कहें परमात्मा । तुने मुझे चून लिया रे ।

प्रसन्न दांपत्य में कभी अपने साथी की
बात सूनकर नाराज नहीं होना चाहिए ।

७६

पल पल जी लो मेरे प्यारे । कल किसने देखा है ।
खाली हाथ आया रे । खाली हाथही जायेगा रे ।
जाग तू मेरे प्यारे । वक्त निकल जायेगा रे ।
दास कहे परमात्मा । तू क्यूं मोह माया में अटका रे ।

७७

तुजमें तू है तू कहाँ खोज रहा है ।
मैने तुझे चून लिया है । तू कहाँ ढुँढत रे ।
तू मेरा बच्चा दिल का सच्चा । सारा खेल तेरा रे ।
दास कहे परमात्मा । मै अनजान दास हूँ तेरा रे ।

प्रसन्न दांपत्य में भावना और अहंकार दूर करना सुखी संसार है ।

७८

मेरा मेरा कुछ नहीं । मै बच्चा तेरा दास हूँ तेरा रे ।
संसार का सार क्या है । ढुँढने मुझे भेजा रे ।
सुख भीतर तेरा दुःख भी तेरा । प्रेम भाव से मिला रे ।
दास कहें परमात्मा । सारा भेद मिटाया मै देखनेवाला रे ।

७९

संसार का सार क्या है । मुझे ढुँढने तूने भेजा रे ।
सुख भी तेरा दुःख भी तेरा । मन भी तेरा तन भी तेरा ।
कब तक मुझे सताओगे । मै तेरा बच्चा काहे डराओ रे ।
दास कहें परमात्मा । सुख दुःख के परे तुझे जाना रे ।

प्रसन्न दांपत्य में जब सब साथ छोड देते है तब जीवनसाथी साथ देते है ।

८०

धर्म जात पंथ के आगे । तू है रे भाई ।
फिर ये धरती पर । क्यूं है लढाई ।
प्रेम भाव सेवा जानते नहीं । करते रहो लढाई ।
दास कहें परमात्मा । सब में तू हैफिर भी अनजान हो तूम भाई ।

८१

मेरा मेरा क्या है । ये तेरा तेरा तूही जानो ।
तुही जाने खेल तेरातेरा रे । मै दास हूँ तेरा खेल तेरा रे ।
तेरा खेल तूही जाने । मै देखनेवाला रे ।
दास कहे परमात्मा । सब कुछ तेरा तेरा रे ।

प्रसन्न दांपत्य में पती पत्नी एक दुसरे का सहारा बनते है ।

८२

सब में तू विराजमान है । भेद अभेद क्या है रे ।
सारा ब्रम्हांड तू है । फिर धर्म जात पंथ क्या है ?
तू मुझे बता सत्य क्या है । कोई मुझे मत डराना रे ।
दास कहें परमात्मा । सबके प्रति समभाव में तू मिला रे ।

८३

मै कौन हूँ मै कौन हूँ । ढुँढने तुने मुझे भेजा रे ।
संसार सार खोजने आया हूँ । मै डरनेवाला नहीं हूँ ।
सुख भी तेरा दुःख भी तेरा । सत्य की राह चून लिया हूँ ।
दास कहें परमात्मा । मौत के भयसे आगे है तूही तू रे ।

जिस दिन आपके विचार बडे होंगे उसी दिनसे
आपकी गणना बडे लोगोंमें हो जाएगी ।

८४

ये विश्वही मेरा घर है । दिल में धर्म जात पंथ बैठा है ।
जब तक ब्रम्हांड से प्यार नहीं । केवल पोपट पंची खाली पडा है ।
जब तक समर्पण नहीं । खाली ही खाली कुछ हासिल नहीं ।
दास कहें परमात्मा । तेरे नाम हजारो तूही तू है तूही तू है ।

८५

सबका मालिक एक है कहते हो । धर्म जात पंथ के उपर लढते हो ।
सब धर्म का सार एक है कहते हो । फिर भी धर्म के नाम पर लढते हो ।
सभी से मुझे प्यार है कहते हो । प्रेम पता नहीं स्वार्थ के लिए लढते हो ।
दास कहें परमात्मा । तेरे नाम हजारो सबके दिल में बैठा है ।

आपको अगर हमेशा गिरने का डर लगता है
तो आप कभी खडा नहीं हो पाओगे ।

८६

हर फुल में सुगंध है तेरा । प्रकृतीही प्रेम है दिल डोलता मेरा ।
पंछीयों की उडानमें वृक्षोंकी लहरोंमें । नभ की आकृतीयों में दिल डोलता मेरा ।
कभी चाँद की शीतलता में । कभी सुर्य की प्रखरता में ।
दास कहें परमात्मा । प्रेम भाव की उर्जा में तू प्रेम से मुझे मिला।

८७

मै कहाँ कहाँ देखू तुझे । जिधर देखता हूँ वहाँ मिला ।
ग्यानीयों में तूही मिला । विज्ञानवादीयोंमें तूही मिला ।
आस्तिक में भी तू मिला । नास्तिक में भी तूही मिला ।
दास कहें परमात्मा । जहाँ भी तुझे देखा तूही तू मिला ।

जब सब कुछ खतम हो गया है ऐसा लगता है
तभी कुछ नया करने का समय आता है ।

८८

ओ ब्रम्हांड की पवित्र उर्जा ओ । मै तुझे कौन से नाम से पुकारु ।
कभी लाओत्से कभी मॉ मेरी । कभी पभू येशू कभी रामकृष्णपरमहंस
कभी बाबा निम करोली ।कभी रमन महर्षि कभी कृष्णमूर्ती ।
दास कहें परमात्मा । धर्म जात पंथकेआगे सब में विराजमान है तू ।

८९

सारे ब्रम्हांड की । बात करता हूँ ।
मै धर्म जात पंथ के आगे । तुझे देखता हूँ ।
सब में तू विराजमान । प्रेम सेवा भाव में देखता हूँ ।
दास कहें परमात्मा । चाहे आस्तिक चाहे नास्तिक सब में तूही तू ।

जिंदगी में सफल होना है तो कष्ट और प्रयास कभी नहीं छोडना चाहिए ।

९०

ब्रम्हांड की शिवशक्तिने । मुझे चुन लिया रे ।
मेरे भोलेनाथ महा कालीने । मुझे प्रेमभाव से भर दिया रे ।
प्रेमभाव की उर्जा से । दिल मेरा नाचने लगा रे ।
दास कहें परमात्मा । सारा भेद खूल गया रे खेल तेरा रे ।

९१

ओ धरती के मनुष्य जातीयों । हो जाओ सावधान ।
चाहे युक्रेन हो चाहे रशिया । ये तो केवल नमुना है ।
हाथियारों के भांडार भरे है । आग की लपटों में आसमान होगा ।
दास कहें परमात्मा । प्रेम भावसे रहना होगा या
मरनाहोगा।

जब तक आप हो जिंदा तब तक सहनी होगी निंदा ।

१२

विश्वशांती की बात करते हो । जादा समय नही हो जाओ सावधान ।
अपने अपने स्वार्थ के लिए । लढते रहोगे हो जावो समशान ।
धरती आकाश में लपटे उठेगी । हो जावो समशान ।
दास कहें परमात्मा । समय की बात अब भी मोका है हो सावधान ।

१३

ओ धरती के मनुष्य जातीयों । हो जाओ सावधान ।
धरती आकाश कंप रहें है । प्रकृती को मत छेडो हो सावधान ।
समय रहतेही जाग जाओ । प्रकृतीही प्रेम है हो जावो सावधान ।
दास कहें परमात्मा । जाग जाओ समय बडा बलवान ।

पराजय की चिंता छोडो । एक बडे यश से पराजय धो जाएगा ।

९४

शक्तिमान शक्तिमान शक्तिमान । कौन है शक्तिमान ।
प्रकृतीही प्रेम है प्रेमही परमात्मा । ब्रम्हांड सबसे बलवान ।
उडान पे उडान ले रहें है । बुध्दीमता का भांडार भर रहें है ।
दास कहें परमात्मा । ब्रम्हांडकी उर्जाको मत छेडो हो जावो सावधान ।

९५

हर आत्मा और दिल की पुकार । विश्वशांती विश्वशांती ।
माँ काली और मदर मेरी की । यही है पुकार ।
जागो उठो समय बडा बलवान । मत झगडो आपमें यही मॉ की पुकार।
दास कहें परमात्मा । प्रेम भावसे रहना मत करो इनकार ।

जिसमें रुची है वही काम मत करो हर काम में रुची लाकर करो ।

९६

मै देख रहा हूँ सबमें विराजमान । तूही तू है ।
काहे की जाती काहे का धर्म काहे का पंथ । सारा ब्रम्हांड तूही तू है ।
प्रेम भाव को दिल में बिठाओ । सारे ब्रम्हांड में समाओ ।
दास कहें परमात्मा । सब मे तू एक है सब में तूही तू है ।

९७

क्षत्रिय हूँ मै राजा जैसा रहता हूँ । राजा जैसा बोलता हूँ ।
सबसे एक जैसा प्रेम करता हूँ । सभी प्रजा से एक नजर से देखता हूँ ।
राजा हूँ राजा जैसा रहूँगा । न्याय समता की बात करुंगा ।
दास कहें परमात्मा । सत्य के साथ रहूंगा ।

जीवन एक किराये का मकान है एक दिन छोडनाही है ।

९८

पंछीयों जैसी । उडान भरना चाहता हूँ
दिल में हवा की सुगंध महसूस करता हूँ ।
प्रकृती के साथ जीवनभर रहना चाहता हूँ .
दास कहें परमात्मा । प्रकृतीही सब कुछ है सेवा करता रहता हूँ ।

९९

छोडो दुनिया की बाते खेल तेरा है तूही जाने रे ।
तुने मुझे चुन लिया रे ।
संसार का सार ढुँढने आया था । सारा भेद तुने मिटाया रे ।
खुले दिल से जिता हूँ । प्रेम भावसे जिता हूँ ।
दास हूँ तेरा मै बच्चा तेरा रे ।
दास कहें परमात्मा । मेरे भोलेनाथ तुने मुझे चून लिया रे ।

दुनिया की हर चीज ठोकर लगनेसे टूट जाती है ।लेकीन कामयाबी ही ऐसी चाज है जो ठोकर खाकरही मिलती है ।

१००

सब के प्रति समभाव न हो ।परमात्मा को पाने की बात करते हो ।
सब में तू एक है कहते हो । धर्म जात पंथ की बात करते हो ।
दास कहें परमात्मा । मेरे महादेव, खेल तेरा तूही जानो रे ।

१०१

हर कदम तेरा हर श्वास तेरा । तेरे नाम हजार तू अनंत रे .
हर पल पल तूही तू है । जहाँ देखूँ तूही तू रे ।
हर अनजान रहस्य तू है । तुझे ढुँढू मै कहाँ रे .
दास कहें परमात्मा । तेरे रहस्य अनंत तुझे कौन जाने रे ।

जिसकी फितरत हमेशा बदलने की रहती है वो कभी किसी का नहीं हो सकता, चाहे वो इन्सान हो या समय ।

१०२

सगुन भी तू निर्गून भी तू । मेरी माँ मेरे भोले नाथ ।
अभेद भी तू भेद भी तू । समझ जाओ सुधर जा तू ।
प्रेम भी तू भाव भी तू । तुही तू तूही तू ।
दास कहें परमात्मा । सारा ब्रम्हांड है तू ।

१०३

हवा भी तू साँस भी तू । मेरी माँ मेरे भोलेनाथ ।
बीज भी तू वृक्ष भी तू । क्रोध भी तू प्रेम भी तू ।
प्रेमभाव से पुकारो । सदा खडा है तूही तू ।
दास कहें परमात्मा । सब कुछ खेल तेरा यही शिवशक्ति का नारा ।

समझदार लोक दुसरोंसे उलझने के बजाय
खुद को सुधारने में वक्त बिताते है ।

१०४

तुने मुझे चून लिया । तेरे बच्चे के लिए अब क्या बचा रे ।
प्रेमभाव से समर्पन कर दिया । सब कुछ खेल तेरा रे ।
तू जाने खेल तेरा । सब कुछ तेरा तेरा ।
दास कहें परमात्मा । तेरा खेल तूही जाने मेरी माँ ।

१०५

हिमालयों की गुँफाओं में । तेरा सुगंध आता है ।
धरती आकाश पाताल में ।तेरा भ्रमन रहता है ।
हर कण कण में तूही है । मेरे दिल में बसता है ।
दास कहें परमात्मा । शिवशक्ति का नारा लगाओ कर लो बेडा पार ।

जो बाहर की सुनता है वो बिखर जाता है ।
जो अंदर की सुनता है वो संवर जाता है ।

१०६

तूझे देखता हूँ वृंदावन की गली में । पंछीयोंकी छहछहाट में ।
कभी जमुनाजी की खलखलाहट में । कभी राधारानी भाव में ।
कभी भंडारे की बैठक में । कभी साधुओं के चरणों में ।
दास कहे परमात्मा । तू अनेक में एक है सारा खेल तेरा रे ।

१०७

सत्य की राह पर चलो । प्रेम भाव को जोडो रे ।
काहे का स्वर्ग काहे का मोक्ष । मै तो तुझें देखनेवाला रे ।
सब कुछ खेल तेरा रे । मै तेरे चरणों का दास रे ।
दास कहें परमात्मा । तू सब में है फिर भी अनजान रे ।

सोच का ही फर्क होता है वरना समस्यांए आपको दुर्बल नहीं
मजबूत बनाती है ।

१०८

तेरे रास्ते अनेक । तू है एक रे ।
मौन भी तू ध्यान भी तू । विचार भी तूही तू रे ।
आकाश भी तू धरती भी तू । पाताल भी तू रे ।
दास कहें परमात्मा । सारा ब्रम्हांड तूही तू रे ।

१०८

हवा भी तू पानी भी तू । बीज भी तू वृक्ष भी तू ।
तेरे नाम हजारो तेरे खेल हजार । तुझे कौन जाने रे ।
जिसने तुझे जाना रे । वो अकेला हो गया रे ।
दास कहें परमात्मा । बाहर देखनेवालों पहले भीतर जानो रे ।

उम्मीद हमें कभी छोडकर नहीं जाती है लेकीन
हम उम्मीद को छोड देते है ।

१०९

हे ब्रम्हांड तू कौन है । मुझे सत्य बता देना ।
मत छुपाओ अपने राज । क्यू पागल बनाता रे ।
तुझे ढुँढने ढुॅढते कितने आये । कितने चले गये रे ।
दास कहें परमात्मा । तेरे अनंत रहस्य तुझे कौन जाने रे ।

११०

हर कदम तेरा हर श्वास तेरा । तेरे नाम हजारों तू अनंत रे ।
हर पल पल तूही तू है । जहाँ देखूँ तूही तू रे ।
हर अनजान रहस्य है तू । तुझे ढुँढू मै कहाँ रे ।
दास कहें परमात्मा । तेरे रहस्य अनंत तुझे कौन जाने रे ।

महानता कभी न गिरने में नहीं बल्की बार बार गिरकर उठ जाने में है ।

१११

शून्य की बात है । भोलेनाथ का साथ है ।
शिवशक्ति का नारा लगाओ । कर लो सबसे प्यार ।
कणकण में तूही है । मेरे भोलेनाथ ।
दास कहें परमात्मा । मेरे भोलेनाथ कर दिया बेडा पार रे ।

११२

ओ मेरी माता तू करती सब की सहायता । तू सारे ब्रम्हांड की माता ।
तेरे अनंत रुप अनंत खेल है । प्रेम भाव से तुझे जाना रे ।
कभी शक्ति तो कभी करुणा रुप में । तेरे रंग रुप है अनेक रे ।
दास कहें परमात्मा । प्रेम भाव से भर दिया मै तेरा दास रे ।

रिश्तो की कदर भी पैसों की तरह करनी चाहिए
क्यों की दोनो को कमाना मुश्किल और गवाना आसान है ।

११३

शराब महापाप है कहते हो । क्यों अंध विश्वास फैलाते हो ।
शराब से करोडो महसूल लेते हो । गली गली में ठेके लगाते हो ।
शराब सभी पी लेते है । कोई मौन की कोई ध्यान की ।
दास कहें परमात्मा । ऐसेही चलता आया है चलताही रहेगा रे ।

११४

माँ तेरे चरणों का प्रसाद मिल गया है । तेरा बच्चा धन्य हो गया ।
कभी प्रेमसे कभी तेरी शक्तिसे । मेरे आत्मा को भर दिया रे ।
माँ देहभावके परे तुझे देखा रे । मन बुध्दी के आगे तुझे जाना रे ।
दास कहें परमात्मा भावसे। माँ तुने मुझे प्रेमभावसे भर दिया रे ।

पती पत्नी के झगडे में अबोला होता है । इसमें जो पहला बोलता है वही समझदार होता है क्योंकि रिश्ता टिका रखने की उसे जादा फिकर रहती है ।

१ १ ५

जन्म और मृत्यू सत्य है कहते हो ।
सत्य की राह पर । चलने से डरते हो ।
काहे का परमात्मा तूने पाया । मौत से डरते हो ।
दास कहे परमात्मा । तेरा बच्चा तेरा खेल जान गयो रे ।

१ १ ६

शुन्य की बात है । शिवशक्ति का साथ है ।
अपने आप में समेट जाओ । आगे शिवशक्ति का साथ है ।
क्यों तुने भेजा इस संसार में । तेरा बच्चा जान गयो रे ।
दास कहें परमात्मा । प्रेम भाव से सबको एक देखना रे ।

हरेक इन्सान में कुछ न कुछ अच्छाई रहती है । उसमें से जो अच्छा है वो लेना और बाकी छोड देना इन्सानियत कहलाती है ।

११७

क्वांटम थेरी को ढुँढनेवाले । हो जाओ सावधान ।
ब्रम्हांड की बात करते हों । अपने आप को कहते हो शक्तिमान।
शक्तिया ब्रम्हांड नहीं हथीयार ब्रम्हांड नहीं । मनबुध्दी विचार भी ब्रम्हांड नहीं ।
दास कहें परमात्मा । शक्तियों के आगे है वो । उसका रंग,रुप, स्पर्श गंध नहीं ।

११८

उस्मान मीर के गीत गायन सुनके । दिल डोलता मेरा रे ।
जिस गुरुने तुम्हे आशीर्वाद दिया । वो संत मुरारीबापू को नमन मेरा रे ।
हे ब्रम्हांड ऐसे गुरु जिसको मिल जाये । इस ब्रम्हांड का कल्याण हो जाये रे ।
दास कहें परमात्मा । सच्चा गुरु जिसे मिल जाए मुर्दाभी जिंदा हो जाए रे ।

असफलता के डर को अपने सपनों के बीच की बाधा मत बनने दें, बल्कि उसे अपने सफल होने की प्रेरणा बनाएं।

१११९

धन्य है वो संत मुरारीबापू प्रेमानंदजी । जाग जाओ देशवासीयो फिर मौका नहीं ।
चरण छुओ उनके जो दुःख दर्द सहते हूए सत्य की राह पर चलते है ।
दास कहें परमात्मा । सुख दुःख के परे इन्होंने ब्रम्हांड को जाना रे ।

१२०

शिवशक्तिही ब्रम्हांड है कहते हो । और धर्म जात पंथ में अटकते हो ।
कर लो सबसे प्यार । खोलो सारे द्वार ।
दास कहें परमात्मा । शिवशक्ति का नारा लगाओ करलो बेडा पार रे ।

आत्मविश्वास का मतलब है कि आप अपने सपनों का पीछा करें, चाहे कितनी भी कठिनाइयाँ आएं।

१२१

आप कोई भी स्थिती में हो । सुख या दुखशिवजी के शरणआओ।
शिवशक्ति को याद करके । बडा पार लगाओ ।
हर कण कण में तु है । मै दास तेरा बच्चा तेरा ।
दास कहें परमात्मा । शिवशक्ति के साथ जिओ परमानंद पाओ ।

१२२

शिवशक्ति ब्रम्हांड युनिव्हर्स संसार । सब एकही है .
चाहे जो करलो । सत्य की राह पर चलना है ।
मत अटकना धर्म पंथ में । सब में परमात्मा एक है रे ।
दास कहें परमात्मा । कब तक गुलाम रहोगे रे सत्य को जानो रे ।

जो व्यक्ति समस्याओं के समाधान खोजता है, वही सफलताओं की चाबी हासिल करता है।

१२३

सबके प्रति समभाव रखना । फिर ब्रम्हांड की योजनोओंको देखना ।
सब के प्रति प्रेम भाव रखना । फिर शिवशक्ति का खेल देखना ।
प्रकृतीही प्रेम है प्रेमही परमात्मा . आगे मेरे शिवजी और मां काली का खेल देखना .
दास कहें परमात्मा । शुध्द भावसे आना शुध्द भाव से जीना ।

१२४

चिंता छोड तू । अचिंत होय रे ।
क्या आना जाना । सब परमात्मा पे छोड रे ।
कल किसने देखा है । तू परमात्मा को जोड रे ।
दास कहें परमात्मा । प्रेम भाव से जानो रे ।

सपनों की उडान वही भर सकते है जो अपने डर को पिछे छोड देते है ।

१२५

जीवन के अंतिम सत्य को जान लियो रे ।
मेरी माँ मेरे भोलेनाथ मै दा तेरा रे ।
केवल सत्य की राह पर चलना है मेरी माँ ।
दास कहे परमात्मा । केवल प्रेमभाव सेवा से जीना रे ।

१२६

हे इन्सान मदहोश बन के मत जिओ रे ।
क्या पता कब काल आये रे हो जाओ सावधान ।
बाहर की चकाचोंधमें मत अटकाना रे ।
दास कहें परमात्मा । भोलेनाथ की शरण आओ होगी नय्या पार रे ।

किसी के केवल देखनेसे या स्पर्श करनेही दिल पिघल जाता है वही सच्चा प्यार है ।

१२७

जागो रे भाई जागो रे जागो रे ।
मत करो अभिमान कर लो थोडा ध्यान रे ।
मौन ध्यान में सदा रहो होगा चमत्कार रे ।
दास कहें परमात्मा । तेरे भीतर ध्यान मेंही पायेगा रे ।

१२८

सुबह की शांत प्रहर में तुझे याद करता हूँ ।
मौन ध्यान की निंव में तेरा भाव देखता हूँ ।
प्रेमभाव से तुझे देखूँ तू भीतर बाहर एक रे ।
दास कहें परमात्मा । सबका का प्यारा तू एक रे ।

१२९

जाग उठो इन्सान । मोह माया की नींद में क्यों सोया रे ।
अंत समय आयेगा । फिर धनका क्या काम रे ।
सबके लिए खप गया तू मेरा कोई नहीं तू समझ रे ।
दास कहें परमात्मा । याद करके महादेव को कर ले बेडा पार रे ।

१३०

शिवजी के शरण जो आयेगा । वही ब्रम्हांड के राज जानेगा ।
कर लो शिवजी से प्यार । लगाओ बेडा पार ।
शिवजी महिमा जो गायेगा । ओ परम सत्य को जानेगा ।
दास कहें परमात्मा । मेरे भोलेनाथ हो गया बेडा पार रे ।

जो आनंद पाने में है उसेसे कई गुना जादा आनंद लगातार
कोशिश करने में होता है ।

१३१

तू सब में एक है । हे ब्रम्हांड मेरे भोलेनाथ ।
तेरे बिना किसको पुकारु रे । जो ब्रम्हांड की शक्तिमें शरण जायेगा रे ।
कब तक झूठ बोलेगे । सबमें परमात्मा एक रे ।
दास कहें परमात्मा । तुझे जाननेवाले हिमालय में मौन हो गये रे ।

१३२

अनंत कालसे अस्तित्व में हूँ मै । मेरा राज कौन जानेगा ।
जहाँ जहाँ सत्य प्रगट होगा । वही मुझे जानेगा ।
प्रकृती के साथ जो रहेगा । वही सत्य को जानेगा ।
दास कहे परमात्मा । मेरे राज अनेक, खेल अनेक मै सब में एक ।

जो आनंद पाने में है उसेसे कई गुना जादा आनंद लगातार
कोशिश करने में होता है ।

ऋण निर्देश

मैने अपनी स्फुर्तीसे और आपनी ध्यानसे यह छोटीशी किताब लिखी है । मेरे कई दोस्त, रिश्तेदार और स्नेही जनोंने मुझे किताब लिखने के लिए प्रेरित किया है । निसर्ग के सानिध्य में रहते हुए मुझे जो भी भक्ति पर पंक्तियाँ मन में आयी उसे कागज पर उतार लिया । मुझे कबीर के दोहे बहूत पसंद है । कबीरजी का मैं भक्त भी हूँ और उनके दोहे मुझे जीने की राह दिखाते है । इसी धर्ती पर मैने अपने काव्य लिखा है । इस किताब से मेरी मन की मुराद पुरी हो गयी । आज यह रचना दोहे की किताब आपके हाथ में देते हुए मुझे बेहद खुशी हो रही है । मेरा कई साल का सपना पुरा हुआ है । लेकीन जिन्होंने मुझे यह किताब लिखने के लिए और प्रकाशित करने के लिए प्रोत्साहित किया और मार्गदर्शन किया उन्हीं सभीका मै दिलसे आभार व्यक्त करता हूँ,ऋण व्यक्त करता हूँ ।

जिनका मुख्य रुपसे आभार व्यक्त करना चाहिए वह महनीय व्यक्ति : पदमश्री अण्णासाहब हजारेजी, पदमभूषण पोपटरावजी पवार, मा.ना. राधाकृष्ण विखे पाटीलसाहब, मा. डॉ. सुजय विखे पाटील साहब, मा.आ. शिवाजीराव कर्डिलेसाहब, मा.आ. विक्रमसिंह पाचपुते पाटील साहब और परिवार, मा. आ. संग्राम जगतापसाहब, मा.खा. निलेश लंकेसाहब, मा.यशवंतराव गडाखसाहब और परिवार, मा. महसूल आयुक्त नानासाहब बोठेसाहब, मा.उपजिलाधिकारी तुकाराम कासार साहब, ब्रिगेडियर भिमाजी भालसिंग, कर्नल मोहन

भालसिंग, प्रोफेसर रोहिदास भालसिंग, प्रोफेसर संगीताताई भालसिंग, मा. राहूल जगतापजी, मा. दिलीप भालसिंगजी, मा.अभिलाष पाटील घिगेजी, मा. भाऊ साहब बोठेजी, मा. बाळासाहेब हराल पाटीलजी, मा. शरद बोठेजी,सागर कासार, गणेशजी गवळी, मा विक्रम कासार साहब, मा. रंगनाथ निमसे जी, मा शिवभक्त सदा खेडकर जी इन सबका मै बहूत आभारी हूँ ।

हमारे कला और संगीत उपासक मित्र मंडल मा.कै. गुरुवर्य प्रमोद दिक्षीत, मा. बालासाहेब वाईकर, मा. शेखर दराडे, मा. रामदास देशपांडे, ऐरोली मित्र मंडल, मा श्री पवारसाहब, मा. सदानंद गोले, रमेश वाघमारे, मा.श्री बर्गेसाहब, मा.श्री आढावसाहब, रमेश सालवे, मा.रामदास पाटील, मा. दिनकर बुवा, धनावडे , कृष्णकांत सुतार, मा. नामदेव पोस्टमास्तर, भजनी मंडल से अनिल गायकवाड, समस्त भजनी मंडल वालकी, बालासाहब कांडेकर, मा.रमाकांत बोठे, मा.मल्हारी बोठे, सुमीत बोठे, पोपट बोठे, श्रीधर बोठे, रोकडे, जासूद ड्रायव्हर इन्ही सभी का मन:पूर्वक आभार !

इनके अलावा मित्रमंडल के सदस्य सुरेश भालसिंग, चंद्रकांत कासार, निलेश तोडमल, गणेश भालसिंग, सोमनाथ कांडेकर, डॉ. बाबासाहेब बोठे, डॉ. युवराज कासार, अर्जून कासार, और मेरे पुलीस डिपार्टमेंट मित्रमंडल, नवी मुंबई पोलीस मित्र मंडल, ठाणे शहर पोलीस मित्र परिवार, माजी सैनिक मित्र परिवार इनका भी मै विशेष रुपसे आभार व्यक्त करता हूँ । मा. तुकारामजी तिकोने, यशोदा तिकोनेजी, विजया तिकोने, समस्त भालसिंग परिवार, बोठे

परिवार, कुटे परिवार, काटकर परिवार इनका भी आभार व्यक्त करना मेरा कर्तव्य है!

पत्रकार मित्र शरद कासार, ज्ञानदेव गोरे, विक्रम गायकवाड, वारकरी मित्र मंडल इन सबका विशेष आभार! ह.भ.प. ज्ञानेश्वर माऊली कदम, ह.भ.प, सतिश महाराज निमसे, ह.भ.प. प्रमोद महाराज गुंड, ह.भ.प. शंकर भारतीबाबा, ह.भ.प. ओमबाबा, ह.भ.प. सौरभ साठे, ह.भ.प.श्रीनिवास घुगेजी, सब वारकरी संप्रदाय मित्र मंडल इन सबका दिलसे आभार व्यक्त किए बिना या काव्य ग्रंथ की परिपुर्णता नहीं होगी ।

इन सभी लोगों का प्यार और आशीर्वाद सदा मेरे पिछे है इसलिए मै कार्य कर सका हूँ । मुझे पुरा भरोसा है की मेरा यह प्रयास आपको पसंद आयेगा । ऐसेही प्यार की उम्मीद रखते हूए मै फिर एक बार सभी का शुक्रगुजार हूँ । धन्यवाद ।

जयहिंद ।

देवराम रभाजी भालसिंग